गुरु तेगबहादुर की बानीः दार्शनिक परिप्रेक्ष्य

- मनमोहन सिंह

गुरु तेगबहादुर जी की बाणी पंद्रह रागों में गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज है, यह अंतिम श्लोक हैं जहाँ पर गुरु ग्रंथ साहिब जी की समाप्ति होती है। इस बाणी का स्वर वैराग्य पूर्ण है। इन श्लोकों के सार में सांसारिक सुखों, वासनाओं और लोभों के आकर्षण और माया की वस्तुओं से ऊपर उठने का उपदेश है, और परोपकार के लिए लगाव का उल्लेख है, जो इससे जुड़े दुखों को बदल देता है और दुनिया और आत्मा में शांति स्थापित करता है। भारतीय रस सिद्धांत की दृष्टि से गुरु तेगबहादुर की बाणी में प्रबल रस वैराग है।

'वैराग' का अर्थ है पिघलना, करुणा और दुःख की अभिव्यत्तिफ। वैराग दो संज्ञाओं 'वि' और 'राग' का शब्द है। 'वि' एक नकारात्मक संयोजन है और राग का अर्थ है प्रेम, मनोदर्शन, आनंद, अभेदता आदि। इस प्रकार वैराग्य का अर्थ है परमार्थ की जोशीली याचना, संसार की भौतिकता और यथार्थवाद की अवहेलना करना जो इन भावनाओं के प्रतिकूल है। मनुष्य का वैरागी बनना, मन को सांसारिक वस्तुओं से अलग करना और ज्ञान और भत्तिफ के मार्ग पर चलना। वैराग्य का ऐसा विचार गुरु साहिब की बाणी में स्पष्ट है।

वैराग्य की मनोवृत्ति पर, विशेषकर भारतीय सनातन में अथाह दर्शन प्राप्त होता है। वैदिक हिंदू परंपरा और बौद्ध दर्शन में, वैराग्य का एक विशेष महत्त्व है जो मन को माया मोह से मुत्तफ करने और परमार्थ की ओर बढ़ने से संबंधित है। माया भारतीय दर्शन में एक ऐसी घटना है जो शाश्वत है लेकिन उसका रूप कालातीत है। ब्रह्म शाश्वत है, जिसका अर्थ है अकाल। शंकराचार्य का ब्रह्मसूत्र अद्वैत में इस द्वंद्व को स्थापित करता है। भगवद गीता दिव्य दर्शन का व्यावहारिक रूप है।

जब वैराग्य की स्थिति जब मन धारण कर ले तो, काल के पार अर्थात् अकाल हो जाता है। ज्ञान की दृष्टि से जगत् को देखना ही दिव्य ज्ञान है। इस ज्ञान का पहला चरण वैराग्य है। इसलिए, यह मन की शुद्ध अवस्था नहीं है बल्कि दिव्य ज्ञान के मार्ग की शुरुआत है। गुरु साहिब की बाणी में दिव्य ज्ञान की अपील दृश्य जगत के सुखों और सुखों को पार करना है। इस श्रेष्ठता में वैराग्य की प्रबलता स्वाभाविक है। इस वैराग्यपूर्ण भावना के कारण गुरु साहिब के श्लोकों से मन द्रवित हो जाता है। इन श्लोकों में वैराग्य का आवेग व्यापक रूप से पाया जाता है,फ्बिखियन सो काहे रचियो, निमिख न होए उदासय् यह उदासी ही वैराग्य है। दृश्यमान सांसारिक सुख, सुविधा और वस्तुओं का त्याग। राग देवगांधारी में, गुरु साहिब कहते हैं कि सब कुछ जीवित के साथ ही व्यवहार है। जब तक प्राण होते हैं, तो माता, पिता, रिश्तेदार और पत्नी हर समय पुकारते हैंऋ लेकिन जैसे ही जीवन चला जाता है, कोई आधा घंटा भी घर में नहीं रखता है और उन्हें तुरंत बेदखल कर दिया जाता है। राग सोरठ में लिखते हैं-

इह जग मीत न देखयो कोए सगल जगत अपने सुख लगियो दुःख महि संग न कोए।

दारा मीत पूत संबंधी सगरे धन सिऊ लागे।

जब ही निर्धन देखयो नर कऊ सगु छाडि सभ भागे।

वैराग्य की भाषा में दृश्य जगत नाशवान लगता है। इससे मन खिन्न हो जाता है। वैराग्य की भाषा के सारे बिम्ब विधान सपना, बुलबुला, छाया, निमख, मृग तृष्णा, धुएँ का पहाड़, बादल, आदि के रूपकों में से अपने आप को व्यत्तफ करते हैंऋ जो एक तरह के नश्वरता और क्षण भंगुरता को प्रकट करते हैं। जो एक तरह से भ्रम और धोखे का प्रतीक हैं। जिनका अपना कोई ठोस रूप नहीं होता। गुरु ग्रंथ साहिब की पूरी बाणी में वैराग्य की भाषा व्याप्त है लेकिन गुरु तेगबहादुर की बाणी में यह अर्थ विशेष रूप से प्रबल है। वे देवगांधारी राग में लिखते हैंऋ

मृगतृष्णा जिउं जग रचना इह देखहूँ रिदै बिचारी। (436द्ध जो दिखायी दे रहा है, वह बादल की छाया की तरह मिथ्या है,

अर्थात्ः इसने समाप्त हो जाना है। राग गऊड़ी में गुरु साहिब बताते है-

जो दीसै सगल बिनसै जिऊ बादर की छायीं। (219द्ध

हे मनुष्य इस सच को मान ले कि सारा जगत सपने की तरह है। राग सोरठि में गुरु साहिब बताते है-

सगल जगत है जैसे सुपना बिनसत लगत न बार (633द्ध जो दिखायी दे रहा है वह बादल की छाया के समान है। राग सारंग में सपने वाले भाव को पिफर से दृढ़ करवाया है-

संग सुपने कै इहु जग जान।

बिनसै छिन मैं साचि मान। (1231द्ध

यह जगत चलायमान है, कुछ भी स्थिर नहीं है। सबकुछ जो दृश्यमान है, अस्थिर हैः

इह जग धुएँ का पहार। तै सच मानिया किह बिचार।

इस जगत की आयु उतनी ही है जितनी पानी के बुलबुले कीः जैसे जल ते बुदबुदा उपजै बिनसै नीत।

जग रचना तैसे रची कहु नानक सुन मीत। (25द्ध

भारतीय दार्शनिक परंपरा में, काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार जैसे पाँच इंद्रियों और पाँच विकारों से मुत्तफ होने के साथ साथ प्रशंसा, बदनामी, अहंकार और झूठे ढोंगों का त्याग करना आवश्यक माना गया। गीता उन्हें माया कहती है, जिससे मनुष्य जगत् के मर्म को नहीं समझता, बल्कि दृश्यमान को ही सत्य मान लेता है। इसे समझने के लिए सब कुछ त्याग, वैराग्यमयी होना आवश्यक है। एक प्रकार से यह ज्ञान प्राप्ति का प्रथम चरण है। गुरु तेगबहादुर की बाणी वैराग्य की स्थिति के वर्णन से भरी है।। जिस मन में वैराग्य की इच्छा परिपक्व नहीं हुई है, उसके लिए ध्यान और मोक्ष प्राप्ति संभव नहीं है। श्लोक 16, 14 और 15 के अनुसार सुख दुःख जिह परसे नहि लोभ मोह अभिमान। कहु नानक सुन रे मना सो मूरत भगवान। उसतति निंदिया नाहि जिह, कंचन लोह समान। हरख सोग जाके नहि बैरी मीत समान।

कहू नानक सुन रे मना मुकति ताहि ते जान।

भगवद गीता में, कृष्ण अर्जुन को उपदेश देते हैंऋ फ्हे पुरुषों में श्रेष्ठ अर्जुन! वह मनुष्य मृत्यु रहित होता है, जो दुख-सुख, हर्ष-शोक में नहीं पड़ता, बल्कि जो उनके बीच मध्य में कहीं स्थित है। ज्ञानी पुरुष समदर्शी होता है। उसका मन संकट में नहीं डगमगाता। जिसे सुख की लालसा न हो। मन, भय और क्रोध से भरा हुआ न हो। जो मनुष्य स्थिर-बुद्धि वाला है वह विद्वान, ब्राह्मण, चंडाल, गौ, हाथी या कुत्ते में अंतर नहीं करता।

वैराग्य उत्पन्न होने का मुख्य स्रोत मृत्यु का ज्ञान है। मनुष्य काल के अधीन है। संस्कृत के 'वैराग शतक' के कवि भर्तृहरि कहते हैं– कालनायातोवयमेवजाता।

अर्थात्ि काल नहीं बीतता, मनुष्य बीत जाता है। गुरु तेगबहादुर साहिब की बाणी में वैराग्य का कारण प्रबल मृत्यु भय है। इसका चित्राण बार-बार विभिन्न रूपों में हुआ है। राग सोरठि और मारू की पंत्तिफयाँ इस सूत्र की भलीभांति व्याख्या करती प्रतीत होती हैंः

काल बियाल जिऊ परिउ ढौले मुख पसारे मीत।

आज कलि फुनि तोहि ग्रसि है समझि राखियो चीत।।... काल फास जब गरमै मेली तिह सुधि सभ बिसरायी।

इन श्लोकों के दार्शनिक आधार में देह की नश्वरता और विधाता की रचना की स्थिरता को परस्पर विरोधी स्थितियों में उपस्थित कर यह सिखाया जाता है कि शरीर की नश्वरता को, ईश्वरीय हुक्म में रह करऋ धैर्य, स्थिरता और संतोष के साथ स्वीकार करना आवश्यक है। जगत् की रचना को रेत की दीवार के रूप में दर्शाया गया है। इस दुनिया से सभी को जाना है। राम ने भी और रावण ने भी। यह दुनिया एक सपने की तरह है, क्योंकि यह संसार स्थिर नहीं है, अर्थात् शाश्वत नहीं है। इसलिए व्यत्तिफ को चिंता से मुत्तफ होना चाहिए। जो पैदा हुआ है वही नाशवान भी है। क्योंकि वह कालवश है। इसलिए सारे जंजाल से मनुष्य को मुत्तफ होना चाहिए। श्लोक 49, 50, 51 और 52 यहाँ प्रासंगिक हैं,

फ्जग रचना सभ झूठ है जानि लेहु रे मीत। कहु नानक थिर नह है जीऊ बालू की भीत। राम गएओ रावन गएओ जा को बहु परिवार। कहु नानक थिर किछु नहीं सुपने जिऊ संसार। चिंता ताकि कीजिये जो अनहोनी होए।

इह मारग संसार को नानक थिर नहीं कोए।

जो उपजएओ सो बिनसि है परे आज के काल।

नानक हरि गुण गाई लै छाडी सगल जंजाल।''

भारतीय दर्शन में मन को चंचल माना जाता है क्योंकि यह किसी न किसी प्रकार की आशा, इच्छा, अभीप्सा और लालसा के पीछे पड़ा रहता है। इसलिए नाशवान आशा से उत्पन्न होने वाले सुख-दुःख का

भागीदार बन जाता है। यह जीवन में अस्थिरता का कारण बनता है क्योंकि वे सभी माया के रूप हैं। इससे छुटकारा पाने का उपाय है कि इनका परित्याग कर, वैराग दर्शन का जीवन व्यतीत किया जाए। गीता के फल के त्याग का दर्शन यहाँ प्रासंगिक है। अष्टांग मार्ग और बौद्ध धर्म के चार सत्य भी इसी ओर इशारा करते हैं। गुरबानी फ्आसा माही निरसय् और 'अंजन माही निरंजन' के विचारों में व्यत्तफ भावना भी इसी बात की सूचक है। गुरु तेगबहादुर साहब की बाणी में भी वही ज्ञान और रहस्य है। आशा मनसा का परित्याग और उनके बंधन से मुत्तिफ। राग सूही में, गुरु साहिब: 'जो नरु दुःख में दुःख नहीं मनाए' का अर्थ दोहराते हैंऋ

सुख दुःख जिह परसे नहीं लोभ, मोह अभिमान कहू नानक सुन रे मना सो मूरत भगवन।

अर्थात् सुख और दुःख का स्रोत आशा और इच्छा ही है। इससे छुटकारा पाने के लिए स्तुति, बदनामी, दुःख, माया का त्याग भी तृष्णा है। सुख चाहिए तो राम की शरण में जाओ। क्योंकि हे मन, मन और शरीर दुर्लभ है। सुख की खोज भी आशा की पूर्ति से निर्धारित होती है। दुःख में सब प्रयत्न व्यर्थ हो जाते हैं। इसलिए हरि के भाव में, अर्थात्ः हुकम में रहना अनिवार्य है,

जतन बहुत सुख के किए, दुःख को कियो न कोए। कहु नानक सुन रे मन हरि भावे सो होए।

गुरु साहिब ने मानव मन की अस्थिरता, काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार जैसे पापों के प्रति झुकाव को प्रस्तुत किया है। मन हाथी के समान मूर्ख और अनियंत्रित है। इसलिए गुरु साहिब के दार्शनिक दृष्टिकोण में मानव मन को शुद्ध करने पर बहुत जोर दिया गया है। राग गौडी अंग 213-19 के अनुसारऋ

प्राणी को हरिजस मन नहि आवै।

अहनिस मगन रहै माया मैं कहु कैसे गुण गावै। साधो इह मन गइयो न जाई।

चंचल तृस्ना संगि बसतु है याते थिर न रहाई।

भारतीय दर्शन में मन को साधने की एक लंबी परंपरा है। माण्डुक्य उपनिषद के अनुसारऋ मन इच्छाओं की कामनाओं की प्राप्ति चाहता है और बदले में कामनाओं से मुत्तफ होना भी चाहता है। गुरु गोरख नाथ से पहले चैरासी सिद्धों का तांत्रिक वज्रयान प्रचलित था। गुरु गोरख नाथ ने इसे सात्विक हठ योग में बदल दिया। गुरु गोरख के आसनों पर ध्यान की विधियों पर आधारित हठ योग आज पूरे महाद्वीप में प्रचलित हो रहा है। आज गुरु गोरख मनुष्य के अंतर-मन की खोज के लिए ध्यान की खोज के अग्रणी आविष्कारक हैं। हठ योग के योग ध्यान के अनुसार, 'ह' का अर्थ है एक सूर्य और 'ठ' का अर्थ है चंद्रमा। सूर्य और चंद्रमा के योग को हठ कहा जाता है। सूर्य का अर्थ है जीवन और चंद्रमा का अर्थ है जीवन। इन दोनों के योग से बना प्राणायाम। प्राणायाम से हवा को नियंत्रित करने का एकमात्र तरीका हठ योग है। सूरज इड़ा नाड़ी है और चन्द्रमा पिंगला है। इड़ा पिंगला नाड़ियाँ को रोक सुषुम्ना मार्ग से ही प्राणवायु को प्रवाहित करना ही हठयोग है। पतंजलि 'चित्तवृत्ति निरोधः' की बात करते हैं।

पतंजलि के अष्टांगयोग के विपरीत है, गुरु गोरखनाथ का षडांग योग। इसमें केवल छः अंगों का महत्त्व है। यम और नियम गौण हैं। इनका साधन पक्ष है हठ योग। गुरु लिखित ग्रंथ 'अवरोधशासनम्' का भी महत्त्व है। इस संदर्भ में गुरु गोरख का यह कथन कि प्राण और अपान, सूरज और चंद्र नामक शरीर में बाहरी और आंतरिक शक्तिफयों द्वारा, उन्हें प्राणायाम, आसन के साथ मिलाकर समरसता लाकर सहज समाधि सिद्ध होती है। जो कुछ पिंड में है, वह ब्रह्मांड में है-'जो पिंडे सो ब्रह्मांडे।' हठयोग साधना पिंड को केंद्र बना ब्रह्माण्ड में निहित शक्तिफयों की प्राप्ति का प्रयास है। गुरबाणी मन के बावरेपन (विक्षिप्तताद्ध को साधने का मार्ग दिखाती है:

कोई माई भूलिउ मन समझावै।

वेद पुराण साध मग सुनि करि निमख न हरि गुण गावै।

गुरु साहिब मन, माया के वश के बंधन से मुक्तफ होने के लिए हरि की शरण जाने का जाने का राग तोड़ी अंग 718 सुझाव देते हैं।

कहु नानक अब नाहि अनत गति बिनु हरि की सरनाई। भारतीय दर्शन में श्रवण परंपरा में नाम जप का बहुत महत्त्व है। अरबिंद ने अपनी पुस्तक 'थाहो आॅर्गिन वाड एराॅन स्पोचा' में वैदिक मंत्रों के उच्चारण से निकलने वाली ध्वनि तरंगों के प्रभाव को बहुत महत्त्व दिया है। जपजी में श्रवण, मनन और ध्यान को भी प्राथमिकता दी गई है। ये तीनों मन की साधना में मदद करते हैं और नैतिक जीवन को बनाए रखने की तकनीक प्रदान करते हैं। आधुनिक पश्चिमी दर्शन में सत्य और शुद्धता के दावों की बनिस्पत प्रामाणिकता के में सर्वसम्मति की प्रबल भावना जैसी कोई चीज नहीं है। जोर्गन हैबरमास ने अपनी पुस्तक 'थाहोर ओन्ड Úैचियो' में इस तरह के दावों को नैतिक प्रवचन के साथ जोड़ा है। नैतिक प्रवचन, जिसमें प्रतिभागी नियमों की निष्पक्षता और कर्मों के निर्देशों के लिए प्रयास करते हैं क्योंकि ये वही हैं, जो सामान्य रूप से संबंधित व्यक्तिफयों के लिए आवश्यक चिंता और सम्मान उत्पन्न करते हैं। उनके बनिस्पत नैतिक प्रवचन या तो लोगों (नैतिक-अस्तित्ववादी प्रवचनद्ध या किसी विशेष समूह या राजनीति (नैतिक-राजनीतिक प्रवचनद्ध के अच्छे जीवन से संबंधित प्रश्नों पर ध्यान केंद्रित करते हैं। परिणाम नैतिक प्रवचन, जो जीवन के इतिहास, परंपराओं और विशेष और अच्छे जीवन मूल्यों से संबंधित हैं, उन विषयों पर एक प्रकार का मजबूत और शक्तिफशाली तर्क-वितर्क प्राप्त करते हैं। व्यक्तिफयों और समूहों के संदर्भों का यह अर्थ नहीं लिया जाना चाहिए कि वे सार्वभौमिक सहमति भी उत्पन्न कर सकते हैं।

भारतीय दार्शनिक परंपरा में, नैतिकता का संबंध वैराग्य की मनोस्थिति के साथ है। वैराग्य की स्थिति मुक्तफ अवस्था है। सफल और असफल के बीच कोई अंतर नहीं है, दोनों स्थितियों को समदर्शी अर्थ में लेने का सुझाव दिया गया है। 'अंजन माही निरंजन' और 'जैस जल माही कमल निरलम मार्गई नैसाने' की स्थिति भी इसी समानता का संकेत है। क्योंकि भक्तिफ में 'अनुग्रह' की याचना होती है, 'फल' की नहीं। इसलिए साधारण फल नहीं,कर्म फल है। भक्तिफ में नदर अर्थात् कृपा का बहुत महत्त्व है। वार मलार में गुरु अमर दास जी के अनुसार, 'नानक जिन कौ नदर करे' ...भगवान की कृपा का बहुत महत्त्वपूर्ण है।

गुरु तेगबहादुर जी की बाणी में भक्ति भाव प्रधान है। कई मिथहासिक और पौराणिक संदर्भों में भक्ति के महत्त्व पर प्रकाश डाला गया है। इन संदर्भों का मूल भारतीय वैष्णव दर्शन में है, जिसका मुख्य स्रोत महाभारत और भगवद-गीता है। इस दर्शन का सार ही भक्ति है, जिससे माया के बंधन टूट जाते हैं। राग मारू में यह शब्द अमग 1104 पर है,

पांचाली कऊ राज सभा मैं राम नाम सुधि आई। जा के दुःख हरिए करुनामय अपनी पैज बढाई।

जिस नर जस किरपानिधि गईयों ता कऊ भयो सहाई। कहु नानक मनहि भरोसै गहि आन सरनाई।

भारतीय दर्शन में जप के साथ-साथ भज अर्थात् भजन का सार भी बहुत प्रबल है। भजन का रूप कीर्तन है, जिसमें भक्त अपने इष्ट प्रभु के गुणों की स्तुति करता है, ताकि वह उनकी कृपा का भागीदार बन सके,

गुण गोबिंद गइयो नही, जनम अकारथ कीन।

कहु नानक हरि भज मना जिह बिधि जल कऊ मीन। भजन वास्तव में प्रभु प्रेम का ही प्रतीक है। भारतीय वैष्णव परंपरा में भक्ति, भजन, कीर्तन और प्रेम को भगवान से मिलने का साधन बताया गया है। भक्ति का वर्णन विशेष रूप से गुरु तेगबहादुर के शब्दों में स्पष्ट है, जिसमें उन्हें अन्य साधनाओं के सामने उत्कृष्टता का आशीर्वाद प्राप्त है,

हरि के नाम बिना दुःख पावै।

भगति बिन सहज नह चखे गुर इह भेद बतावै। कहा भयो तीरथ ब्रत किए राम सरन नहि आवै...।

कहु नानक इह बिधि को प्राणी जीवन मुकति कहावै। भारतीय दर्शन के अनुसार जीवन का परम सार मोक्ष है। चार पुरुषार्थ-काम, अर्थ, धर्म और मोक्ष-जीवन में बहुत महत्त्वपूर्ण हैं। पंचभूत जीवन के पाँच इंद्रिय विकारों से मुक्ति के लिए कर्म और ज्ञान मार्ग के माध्यम से मोक्ष का मार्ग समझाया गया है। गुरबानी दर्शन में मोक्ष जीवन आदर्श की प्राप्ति है। इस उपलब्धि के लिए ज्ञान और करम मार्ग के नियम साधना, जाप, नाम, भगती सेवा और शारदा हैं। मोक्ष की सिख शब्दावली में निर्वाण, भौनिध, भवजल, पार उतरा जैसे कई शब्द हैं। गुरु तेगबहादुर जी के 'मुक्त' शब्द के प्रयोग का अर्थ है जीवन मुक्त। गुरु साहिब की बाणी में, मुक्ति शब्द की परिभाषा, मुक्ति का प्रकार, मुक्ति पाने के साधन और मुक्त या जीवन मुक्त की अवधारणा की जटिलता को एक परिपक्व व्यक्ति की सूत्र शैली में सरल और सीधे तरीके से समझाया गया है। दार्शनिक नैतिक गुणों की प्राप्ति से मोक्ष की प्राप्ति होती है। नैतिक गुणों की प्राप्ति अपने आप में मोक्ष है। निम्नलिखित दो श्लोक एक ही अर्थ की ओर इशारा करते हैं,

उसतति निंदिया नाहि जिह कंचन लूह समान।

कहु नानक सुन रे मना मुकति ताहि तै जानि।

हरख सोग जेक नाहिं बैरी मीत समान।

कहु नानक सुनि रे मना मुकति ताहि तै जानि।

गुरु तेगबहादुर जी की बाणी में ब्रह्म, जीव, जगत, माया और मुक्ति ये पाँच पहलू हैं। उनके दार्शनिक दृष्टिकोण में ज्ञान और भक्ति के नैतिक कार्यों पर अधिक बल दिया गया है। भरोसा, श्रद्धा और सत्य की टेक ही सदा सर्वदा सच्ची टेक है। इसलिए गुरु तेगबहादुर जी की बाणी में इसलिए मनो-वैराग के दर्शन पर अधिक बल दिया है। मन के विकारों से शुद्धि और भक्ति से नाशवान शरीर से मुक्त होने की बड़ी शक्ति मिलती है।

सन्दर्भ:

1. गुरु तेगबहादुर (बानी, ततकरा, शबद अनुक्रमणिकाद्ध, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला, 1975
2. तरण सिंह, गुरु तेगबहादुर का जीवन, संदेश और शहादत, पंजाबी विश्वविद्यालय पटियाला, 1976
3. तारा सिंह, गुरु तेगबहादुर राग रचनावली, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला, 1977
4. डाॅ. भजन सिंह ज्ञानी, गुरु तेगबहादुर, नेशनल बुक ट्रस्ट, भारत, 1994
5. डाॅ. मनमोहन सिंह, गुरु तेगबहादुर के दार्शनिक विचार, मनदीप प्रकाशन, दिल्ली, 1980